

1 Corinthians 1 कुरिन्थियों

१ पौलुस रसूल की तरफ़ से, जो खुदा की मर्ज़ी से ईसा' मसीह का रसूल होने के लिए बुलाया गया है और भाई सोस्थिनेस की तरफ़ से, २ खुदा की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, या'नी उन के नाम जो मसीह ईसा' में पाक किए गए, और मुक़द्दस होने के लिए बुलाए गए हैं, और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने खुदावन्द ईसा' मसीह का नाम लेते हैं। ३ हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा' मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मिनान हासिल होता रहे। ४ मैं तुम्हारे बारे में खुदा के उस फ़ज़ल के ज़रिए जो मसीह ईसा' में तुम पर हुआ हमेशा अपने खुदा का शुक्र करता हूँ। ५ कि तुम उस में होकर सब बातों में कलाम और इल्म की हर तरह की दौलत से दौलतमन्द हो गए, हो। ६ चुनाँचे मसीह की गवाही तुम में कायम हुई। ७ यहाँ तक कि तुम किसी ने'मत में कम नहीं, और हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह के ज़हूर के मुन्तज़िर हो। ८ जो तुम को आख़िर तक कायम भी रखेगा, ताकि तुम हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह के दिन बे'इल्ज़ाम ठहरो। ९ खुदा सच्चा है जिसने तुम्हें अपने बेटे हमारे खुदावन्द 'ईसा मसीह की शराकत के लिए बुलाया है। १० अब ऐ भाइयो! ईसा' मसीह जो हमारा खुदावन्द है, उसके नाम के वसीले से मैं तुम से इल्तिमास करता हूँ कि सब एक ही बात कहो, और तुम में तफ़्रके न हों, बल्कि एक साथ एक दिल और एक राय हो कर कामिल बने रहो। ११ क्योंकि ऐ भाइयो! तुम्हारे ज़रिए मुझे ख़लोए के घर वालों से मा'लूम हुआ कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। १२ मेरा ये मतलब है कि तुम में से कोई तो अपने आपको

पौलुस का कहता है कोई अपुल्लोस का कोई कैफ़ा का कोई मसीह का। १३ क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारी खातिर मस्लूब हुआ? या तुम ने पौलुस के नाम पर बपतिस्मा लिया?। १४ खुदा का शुक्र करता हूँ कि क्रिस्पुस और गयुस के सिवा मैंने तुम में से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया। १५ ताकि कोई ये न कहे कि तुम ने मेरे नाम पर बपतिस्मा लिया। १६ हाँ स्तिफ़नास के खानदान को भी मैंने बपतिस्मा दिया बाकी नहीं जानता कि मैंने किसी और को बपतिस्मा दिया हो। १७ क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं भेजा बल्कि खुशखबरी सुनाने को और वो भी कलाम की हिक्मत से नहीं ताकि मसीह की सलीब बे'ताशीर न हो। १८ क्योंकि सलीब का पैग़ाम हलाक होने वालों के नज़दीक तो बे'वकूफी है मगर हम नजात पानेवालों के नज़दीक खुदा की कुदरत है। १९ क्योंकि लिखा है, "मैं हकीमों की हिक्मत को नेस्त और अक्लमन्दों की अक्ल को रद्द करूँगा।" २० कहाँ का हकीम? कहाँ का आलिम? कहाँ का इस जहान का बहस करनेवाला? क्या खुदा ने दुनिया की हिक्मत को बे'वकूफी नहीं ठहराया?। २१ इसलिए कि जब खुदा की हिक्मत के मुताबिक़ दुनियाँ ने अपनी हिक्मत से खुदा को न जाना तो खुदा को ये पसन्द आया कि इस मनादी की बेवकूफी के वसीले से ईमान लानेवालों को नजात दे। २२ चुनाँचे यहूदी निशान चाहते हैं और यूनानी हिक्मत तलाश करते हैं। २३ मगर हम उस मसीह मस्लूब का ऐलान करते हैं जो यहूदियों के नज़दीक ठोकर और ग़ैर क़ौमों के नज़दीक बेवकूफी है। २४ लेकिन जो बुलाए हुए हैं यहूदी हों या यूनानी उन के नज़दीक मसीह खुदा की कुदरत और खुदा की हिक्मत है। २५ क्योंकि खुदा की बेवकूफी आदमियों की हिक्मत से ज्यादा हिक्मत वाली है और खुदा की कमज़ोरी आदमियों के ज़ोर से ज़्यादा ताक़तवर है। २६ ऐ भाइयो! अपने बुलाए जाने पर तो निगाह करो कि जिस्म के लिहाज़ से बहुत से हकीम बहुत से इस्लियार

वाले बहुत से अशराफ़ नहीं बुलाए गए। २७ बल्कि खुदा ने दुनिया के बेवकूफ़ों चुन लिया कि हकीमों को शर्मिन्दा करे और खुदा ने दुनिया के कमज़ोरों को चुन लिया कि ज़ोरआवरों को शर्मिन्दा करे। २८ और खुदा ने दुनिया के कमीनों और हक़ीरों को बल्कि बे वजूदों को चुन लिया कि मौजूदों को नेस्त करे। २९ ताकि कोई बशर खुदा के सामने फ़ख़ न करे। ३० लेकिन तुम उसकी तरफ़ से मसीह ईसा' में हो, जो हमारे लिए खुदा की तरफ़ से हिक्मत ठहरा, या'नी रास्तबाज़ी और पाकीज़गी और मरू़लसी। ३१ ताकि जैसा लिखा है“वैसा ही हो जो फ़ख़ करे वो खुदावन्द पर फ़ख़ करे।”

२

१ ऐ भाइयों! जब मैं तुम्हारे पास आया और तुम में खुदा के भेद की मनादी करने लगा तो आ'ला दर्जे की तक़रीर या हिक्मत के साथ नहीं आया। २ क्यूँकि मैंने ये इरादा कर लिया था कि तुम्हारे दर्मियान ईसा' मसीह, मसलूब के सिवा और कुछ न जानूंगा। ३ और मैं कमज़ोरी और ख़ौफ़ और बहुत थरथराने की हालत में तुम्हारे पास रहा। ४ और मेरी तक़रीर और मेरी मनादी में हिक्मत की लुभाने वाली बातें न थीं बल्कि वो रूह और कुदरत से साबित होती थीं। ५ ताकि तुम्हारा ईमान इंसान की हिक्मत पर नहीं बल्कि खुदा की कुदरत पर मौकूफ़ हो। ६ फिर भी कामिलों में हम हिक्मत की बातें कहते हैं लेकिन इस जहान की और इस जहान के नेस्त होनेवाले सरदारों की अक्ल नहीं। ७ बल्कि हम खुदा के राज़ की हक़ीक़त बातों के तौर पर बयान करते हैं, जो खुदा ने जहान के शुरू से पहले हमारे जलाल के वास्ते मुक़रर की थी। ८ जिसे इस दुनिया के सरदारों में से किसी ने न समझा क्यूँकि अगर समझते तो जलाल के खुदावन्द को मसलूब न करते। ९ “बल्कि जैसा लिखा है वैसा ही हुआ जो चीज़ें न आँखों ने देखीं न कानों ने सुनीं न आदमी के दिल में आईं वो सब खुदा ने अपने मुहब्बत रखनेवालों के लिए

तैयार कर दीं। ” १० लेकिन हम पर खुदा ने उसको रूह के ज़रिए से ज़ाहिर किया क्योंकि रूह सब बातें बल्कि खुदा की तह की बातें भी दरियाफ़्त कर लेता है। ११ क्योंकि इंसानों में से कौन किसी इंसान की बातें जानता है सिवा इंसान की अपनी रूह के जो उस में है? उसी तरह खुदा के रूह के सिवा कोई खुदा की बातें नहीं जानता। १२ मगर हम ने न दुनिया की रूह बल्कि वो रूह पाया जो खुदा की तरफ़ से है; ताकि उन बातों को जाने जो खुदा ने हमें इनायत की हैं। १३ और हम उन बातों को उन अल्फ़ाज़ में नहीं बयान करते जो इन्सानी हिक्मत ने हम को सिखाए हों बल्कि उन अल्फ़ाज़ में जो रूह ने सिखाए हैं और रूहानी बातों का रूहानी बातों से मुक़ाबिला करते हैं। १४ मगर जिस्मानी आदमी खुदा के रूह की बातें कुबूल नहीं करता क्योंकि वो उस के नज़दीक बेवकूफ़ी की बातें हैं और न वो इन्हें समझ सकता है क्योंकि वो रूहानी तौर पर परखी जाती हैं। १५ लेकिन रूहानी शरूब सब बातों को परख लेता है; मगर खुदा किसी से परखा नहीं जाता। १६ “खुदावन्द की अक़ल को किसने जाना कि उसको ता'लीम दे सके? मगर हम में मसीह की अक़ल है। ” ।

३

१ ऐ भाइयो! मैं तुम से उस तरह कलाम न कर सका जिस तरह रूहानियों से बल्कि जैसे जिस्मानियों से और उन से जो मसीह में बच्चे हैं। २ मैंने तुम्हें दूध पिलाया और खाना न खिलाया क्योंकि तुम को उसकी बर्दाश्त न थी, बल्कि अब भी नहीं। ३ क्योंकि अभी तक जिस्मानी हो इसलिए कि जब तुम मैं हसद और झगड़ा है तो क्या तुम जिस्मानी न हुए और इंसानी तरीक़े पर न चले ? ४ “इसलिए कि जब एक कहता है मैं पौलुस का हूँ और दूसरा कहता है मैं अपुल्लोस का हूँ” तो क्या तुम इंसान न हुए? ५ अपुल्लोस क्या चीज़ है? और पौलुस क्या? खादिम जिनके वसीले से तुम ईमान लाए

और हर एक को वो हैसियत है जो खुदावन्द ने उसे बरूशी। ६ मैंने दरख्त लगाया और अपुल्लोस ने पानी दिया मगर बढ़ाया खुदा ने। ७ पस न लगाने वाला कुछ चीज़ है न पानी देनेवाला मगर खुदा जो बढ़ानेवाला है। ८ लगानेवाला और पानी देनेवाला दोनों एक हैं लेकिन हर एक अपना अज़्र अपनी मेहनत के मुवाफ़िक़ पाएगा। ९ क्यूँकि हम खुदा के साथ काम करनेवाले हैं तुम खुदा की खेती और खुदा की इमारत हो। १० मैंने उस तौफ़ीक़ के मुवाफ़िक़ जो खुदा ने मुझे बरूशी अक्लमंद मिस्त्री की तरह नींव रखी, और दूसरा उस पर इमारत उठाता है पस हर एक खबरदार रहे, कि वो कैसी इमारत उठाता है। ११ क्यूँकि सिवा उस नींव के जो पड़ी हुई है और वो ईसा' मसीह है कोई शरूब्स दूसरी नहीं रख सकता। १२ और अगर कोई उस नींव पर सोना या चाँदी या बेशकीमती पत्थरों या लकड़ी या घास या भूसे का रद्दा रखे। १३ तो उस का काम ज़ाहिर हो जाएगा क्यूँकि जो दिन आग के साथ ज़ाहिर होगा वो उस काम को बता देगा और वो आग खुद हर एक का काम आजमा लेगी कि कैसा है। १४ जिस का काम उस पर बना हुआ बाक़ी रहेगा, वो अज़्र पाएगा। १५ और जिस का काम जल जाएगा, वो नुक्सान उठाएगा; लेकिन खुद बच जाएगा मगर जलते जलते। १६ क्या तुम नहीं जानते कि तुम खुदा का मक़दिस हो और खुदा का रूह तुम में बसा हुआ है? १७ अगर कोई खुदा के मक़दिस को बर्बाद करेगा तो खुदा उसको बर्बाद करेगा, क्यूँकि खुदा का मक़दिस पाक है और वो तुम हो। १८ कोई अपने आप को धोका न दे अगर कोई तुम में अपने आप को इस जहान में हकीम समझे, तो बेवकूफ़ बने ताकि हकीम हो जाए। १९ क्यूँकि दुनियाँ की हिक्मत खुदा के नज़दीक़ बेवकूफ़ी है: चुनाँचे लिखा है, “वो हकीमों को उन ही की चालाकी में फँसा देता है।” २० और ये भी, खुदावन्द हकीमों के खयालों को जानता है “कि बातिल हैं।”, २१ पस आदमियों पर कोई फ़ख़्र न करो

क्योंकि सब चीजें तुम्हारी हैं। ^{२२} चाहे पौलुस हो, चाहे अपुल्लोस, चाहे कैफ़ा, चाहे दुनिया, चाहे ज़िन्दगी, चाहे मौत, चाहे हाल, की चीजें, चाहे इस्तक्रबाल की, ^{२३} सब तुम्हारी हैं और तुम मसीह के हो, और मसीह खुदा का है।

४

^१ आदमी हम को मसीह का खादिम और खुदा के हिकमत का मुख्तार समझे। ^२ और यहाँ मुख्तार में ये बात देखी जाती है के दियानतदार निकले। ^३ लेकिन मेरे नज़दीक ये निहायत छोटी बात है कि तुम या कोई इंसानी अदालत मुझे परखे: बल्कि मैं खुद भी अपने आप को नहीं परखता। ^४ क्योंकि मेरा दिल तो मुझे मलामत नहीं करता मगर इस से मैं रास्तबाज़ नहीं ठहरता, बल्कि मेरा परखनेवाला खुदावन्द है। ^५ पस जब तक खुदावन्द न आए, वक़्त से पहले किसी बात का फ़ैसला न करो; वही तारीकी की पोशीदा बातें रौशन कर देगा और दिलों के मन्सूबे ज़ाहिर कर देगा और उस वक़्त हर एक की तारीफ़ खुदा की तरफ़ से होगी। ^६ ऐ भाइयो! मैंने इन बातों में तुम्हारी खातिर अपना और अपुल्लोस का ज़िक्र मिसाल के तौर पर किया है, ताकि तुम हमारे वसीले से ये सीखो कि लिखे हुए से बढ़ कर न करो और एक की तार्ईद में दूसरे के बरखिलाफ़ शेख़ी न मारो। ^७ तुझ में और दूसरे में कौन फ़र्क़ करता है? और तेरे पास कौन सी ऐसी चीज़ है जो तू ने दूसरे से नहीं पाई? और जब तूने दूसरे से पाई तो फ़ख़्र क्यों करता है कि गोया नहीं पाई? ^८ तुम तो पहले ही से आसूदा हो और पहले ही से दौलतमन्द हो और तुम ने हमारे बग़ैर बादशाही की: और काश कि तुम बादशाही करते ताकि हम भी तुम्हारे साथ बादशाही करते। ^९ मेरी दानिस्त में खुदा ने हम रसूलों को सब से अदना ठहराकर उन लोगों की तरह पेश किया है जिनके क़त्ल का हुक़म हो चुका हो; क्योंकि हम दुनिया और फ़रिश्तों और आदमियों के लिए एक तमाशा ठहरे।

१० हम मसीह की खातिर बेवकूफ हैं मगर तुम मसीह में अक्लमन्द हो: हम कमज़ोर हैं और तुम ताक़तवर तुम इज़्ज़त दार हो: और हम बे'इज़्ज़त। ११ हम इस वक़्त तक भुखे प्यासे नंगे हैं और मुक़े खाते और आवारा फिरते हैं। १२ और अपने हाथों से काम करके मशक्कत उठाते हैं लोग बुरा कहते हैं हम दुआ देते हैं वो सताते हैं हम सहते हैं। १३ वो बदनाम करते हैं हम मिन्नत समाजत करते हैं हम आज तक दुनिया के कूड़े और सब चीज़ों की झड़न की तरह हैं। १४ मैं तुम्हें शर्मिन्दा करने के लिए ये नहीं लिखता: बल्कि अपना प्यारा बेटा जानकर तुम को नसीहत करता हूँ। १५ क्यूँकि अगर मसीह में तुम्हारे उस्ताद दस हज़ार भी होते तोभी तुम्हारे बाप बहुत से नहीं: इसलिए कि मैं ही इन्जील के वसीले से मसीह ईसा' में तुम्हारा बाप बना। १६ पस मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि मेरी तरह बनो। १७ इसी वास्ते मैंने तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजा; कि वो खुदावन्द में मेरा प्यारा और दियानतदार बेटा है और मेरे उन तरीकों को जो मसीह में हैं तुम्हें याद दिलाएगा; जिस तरह मैं हर जगह हर कलीसिया में ता'लीम देता हूँ। १८ कुछ ऐसी शेखी मारते हैं गोया कि तुम्हारे पास आने ही का नहीं। १९ लेकिन खुदावन्द ने चाहा तो मैं तुम्हारे पास जल्द आऊँगा और शेखी बाज़ों की बातों को नहीं, बल्कि उनकी कुदरत को मा'लूम करूँगा। २० क्यूँकि खुदा की बादशाही बातों पर नहीं, बल्कि कुदरत पर मौकूफ़ है। २१ तुम क्या चाहते हो कि मैं लकड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊँ या मुहब्बत और नर्म मीज़ाजी से?

५

१ यहाँ तक कि सुनने में आया है कि तुम में हरामकारी होती है बल्कि ऐसी हरामकारी जो ग़ैर क्रौमों में भी नहीं होती: चुनाँचे तुम में से एक शरूस् अपने बाप की बीवी को रखता है। २ और तुम अफ़सोस तो करते नहीं ताकि जिस ने ये काम किया वो तुम में से

निकाला जाए बल्कि शेखी मारते हो। ३ लेकिन मैं अगरचे जिस्म के ऐतिबार से मौजूद न था, मगर रूह के ऐतिबार से हाज़िर होकर गोया बहालत'-ए-मौजूदगी ऐसा करने वाले पर ये हुक्म दे चुका हूँ। ४ कि जब तुम और मेरी रूह हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह की कुदरत के साथ जमा हो तो ऐसा शरूस् हमारे खुदावन्द 'ईसा' के नाम से। ५ जिस्म की हलाकत के लिए शैतान के हवाले किया जाए ताकि उस की रूह खुदावन्द 'ईसा' के दिन नजात पाए। ६ तुम्हारा फ़ख़र करना ख़ूब नहीं क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा ख़मीर सारे गुंधे हुए आटे को ख़मीर कर देता है। ७ पुराना ख़मीर निकाल कर अपने आप को पाक कर लो ताकि ताज़ा गुंधा हुआ आटा बन जाओ चुनाँचे तुम बे ख़मीर हो क्योंकि हमारा भी फ़सह या'नी मसीह कुर्बान हुआ। ८ पस आओ हम ईद करें न पुराने ख़मीर से और न बदी और शरारत के ख़मीर से, बल्कि साफ़ दिली और सच्चाई की बे ख़मीर रोटी से। ९ मैंने अपने ख़त में तुम को ये लिखा था कि हरामकारों से सुहबत न रखना। १० ये तो नहीं कि बिल्कुल दुनिया के हरामकारों या लालचियों या ज़ालिमों या बुतपरस्तों से मिलना ही नहीं; क्योंकि इस सूरत में तो तुम को दुनिया ही से निकल जाना पड़ता। ११ यहाँ तक कि सुनने में आया है कि तुम में हरामकारी होती है बल्कि ऐसी हरामकारी जो ग़ैर क्रौमों में भी नहीं होती: चुनाँचे तुम में से एक शरूस् अपने बाप की बीवी को रखता है। लेकिन मैंने तुम को दरहक्रीक़त ये लिखा था कि अगर कोई भाई कहलाकर हरामकार या लालची या बुतपरस्त या गाली देने वाला शराबी या ज़ालिम हो तो उस से सुहबत न रखो; बल्कि ऐसे के साथ खाना तक न खाना। १२ क्योंकि मुझे बाहर वालों पर हुक्म करने से क्या वास्ता? क्या ऐसा नहीं है कि तुम तो अन्दर वालों पर हुक्म करते हो। १३ मगर बाहर वालों पर खुदा हुक्म करता है, पस उस शरीर आदमी को अपने दर्मियान से निकाल दो।

६

१ क्या तुम में से किसी को ये जुर'अत है कि जब दूसरे के साथ मुक़द्दमा हो तो फ़ैसले के लिए बेदीनों के पास जाए; और मुक़द्दसों के पास न जाए। २ क्या तुम नहीं जानते कि मुक़द्दस लोग दुनिया का इंसाफ़ करेंगे? पस जब तुम को दुनिया का इंसाफ़ करना है तो क्या छोटे से छोटे झगड़ों के भी फ़ैसले करने के लायक नहीं? ३ क्या तुम नहीं जानते कि हम फ़रिशतो का इंसाफ़ करेंगे? तो क्या हम दुनियावी मु'आमिले के फ़ैसलें न करें? ४ पस अगर तुम में दुनियावी मुक़द्दमे हों तो क्या उन को मुंसिफ़ मुक़रर करोगे जो कलीसिया में हकीर समझे जाते हैं। ५ मैं तुम्हें शर्मिन्दा करने के लिए ये कहता हूँ; क्या वाक़'ई तुम में एक भी समझदार नहीं मिलता जो अपने भाइयों का फ़ैसला कर सके। ६ बल्कि भाई भाइयों में मुक़द्दमा होता है और वो भी बेदीनों के आगे! ७ लेकिन दर'असल तुम में बड़ा नुक़स ये है कि आपस में मुक़द्दमा बाज़ी करते हो; जुल्म उठाना क्यूँ नहीं बेहतर जानते? अपना नुक़सान क्यूँ नहीं कुबूल करते? ८ बल्कि तुम ही जुल्म करते और नुक़सान पहुँचाते हो और वो भी भाइयों को। ९ क्या तुम नहीं जानते कि बदकार खुदा की बादशाही के वारिस न होंगे धोखा न खाओ न हरामकार खुदा की बादशाही के वारिस होंगे न बुतपरस्त, न ज़िनाकार, न अय्याश, न लौंडे बाज़, १० न चोर, न लालची, न शराबी, न गालियाँ बकनेवाले, न ज़ालिम, ११ और कुछ तुम में ऐसे ही थे भी, 'मगर तुम खुदावन्द ईसा मसीह के नाम से और हमारे खुदा के रूह से धुल गए और पाक हुए और रास्तबाज़ भी ठहरे। १२ सब चीज़ें मेरे लिए जायज़ तो हैं मगर सब चीज़ें मुफ़ीद नहीं; सब चीज़ें मेरे लिए जायज़ तो हैं; लेकिन मैं किसी चीज़ का पाबन्द न हूँगा। १३ खाना पेट के लिए हैं और पेट खाने के लिए लेकिन खुदा उसको और इनको नेस्त करेगा मगर बदन हरामकारी के लिए नहीं बल्कि खुदावन्द के लिए है और खुदावन्द बदन के लिए। १४ और

खुदा ने खुदावन्द को भी जिलाया और हम को भी अपनी कुदरत से जिलाएगा। १५ क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बदन मसीह के आ'ज़ा है? पस क्या मैं मसीह के आ'ज़ा लेकर कस्बी के आ'ज़ा बनाऊँ हरगिज़ नहीं। १६ क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई कस्बी से सुहबत करता है वो उसके साथ एक तन होता है? क्योंकि वो फ़रमाता है, “वो दोनों एक तन होंगे।” १७ और जो खुदावन्द की सुहबत में रहता है वो उसके साथ एक रूह होता है। १८ हरामकारी से भागो जितने गुनाह आदमी करता है वो बदन से बाहर हैं; मगर हरामकार अपने बदन का भी गुनाहगार है। १९ क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा बदन रूह- उल - कुदूस का मक़दिस है जो तुम में बसा हुआ है और तुम को खुदा की तरफ़ से मिला है? और तुम अपने नहीं। २० क्योंकि क्रीमत से ख़रीदे गए हो; पस अपने बदन से खुदा का जलाल ज़ाहिर करो।

७

१ जो बातें तुम ने लिखी थीं उनकी वजह ये हैं मर्द के लिए अच्छा है कि औरत को न छुए। २ लेकिन हरामकारी के अन्देशे से हर मर्द अपनी बीवी और हर औरत अपना शौहर रखे। ३ शौहर बीवी का हक़ अदा करे और वैसे ही बीवी शौहर का। ४ बीवी अपने बदन की मुख़्तार नहीं बल्कि शौहर है इसी तरह शौहर भी अपने बदन का मुख़्तार नहीं बल्कि बीवी। ५ तुम एक दूसरे से जुदा न रहो मगर थोड़ी मुद्दत तक आपस की रज़ामन्दी से, ताकि दुआ के लिए वक़्त मिले और फिर इकट्ठे हो जाओ ऐसा न हो कि ग़ल्बा-ए-नफ़स की वजह से शैतान तुम को आज़माए। ६ लेकिन मैं ये इजाज़त के तौर पर कहता हूँ हुक़म के तौर पर नहीं। ७ और मैं तो ये चाहता हूँ कि जैसा मैं हूँ वैसे ही सब आदमी हों लेकिन हर एक को खुदा की तरफ़ से ख़ास तौफ़ीक़ मिली है किसी को किसी तरह की किसी को किसी तरह की। ८ पस मैं बे'ब्याहों और बेवाओं के हक़ में ये कहता हूँ; कि

उनके लिए ऐसा ही रहना अच्छा है जैसा मैं हूँ। ९ लेकिन अगर सब्र न कर सकें तो शादी कर लें; क्योंकि शादी करना मस्त होने से बेहतर है। १० मगर जिनकी शादी हो गई है उनको मैं नहीं बल्कि खुदावन्द हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से जुदा न हो। ११ (और अगर जुदा हो तो बे'निकाह रहे या अपने शौहर से फिर मिलाप कर ले) न शौहर बीवी को छोड़े। १२ बाकियों से मैं ही कहता हूँ न खुदावन्द कि अगर किसी भाई की बीवी बाईमान न हो और उस के साथ रहने को राजी हो तो वो उस को न छोड़े। १३ और जिस 'औरत का शौहर बाईमान न हो और उसके साथ रहने को राजी हो तो वो शौहर को न छोड़े। १४ क्योंकि जो शौहर बाईमान नहीं वो बीवी की वजह से पाक ठहरता है; और जो बीवी बाईमान नहीं वो मसीह शौहर के ज़रिये पाक ठहरती है वरना तुम्हारे बेटे नापाक होते मगर अब पाक हैं। १५ लेकिन मर्द जो बाईमान न हो अगर वो जुदा हो तो जुदा होने दो ऐसी हालत में कोई भाई या बहन पाबन्द नहीं और खुदा ने हम को मेल मिलाप के लिए बुलाया है। १६ क्योंकि ऐ 'औरत तुझे क्या खबर है कि शायद तू अपने शौहर को बचा ले? और ऐ मर्द तुझे क्या खबर है कि शायद तू अपनी बीवी को बचा ले। १७ मगर जैसा खुदावन्द ने हर एक को हिस्सा दिया है और जिस तरह खुदा ने हर एक को बुलाया है उसी तरह वो चले; और मैं सब कलीसियाओं में ऐसा ही मुक़र्रर करता हूँ। १८ जो मरूतून बुलाया गया वो नामरूतून न हो जाए जो नामरूतूनी की हालत में बुलाया गया वो मरूतून न हो जाए। १९ न खतना कोई चीज़ है नामरूतूनी बल्कि खुदा के हुकमों पर चलना ही सब कुछ है। २० हर शरूस् जिस हालत में बुलाया गया हो उसी में रहे। २१ अगर तू गुलामी की हालत में बुलाया गया तो फ़िक्र न कर लेकिन अगर तू आज़ाद हो सके तो इसी को इस्तिyar कर। २२ क्योंकि जो शरूस् गुलामी की हालत में खुदावन्द में बुलाया गया है वो खुदावन्द का आज़ाद किया हुआ है; इसी तरह जो आज़ादी

की हालत में बुलाया गया है वो मसीह का गुलाम है। २३ तुम क्रीमत से खरीदे गए हो आदमियों के गुलाम न बनो। २४ ऐ भाइयो! जो कोई जिस हालत में बुलाया गया हो वो उसी हालत में खुदा के साथ रहे। २५ कुँवारियों के हक में मेरे पास खुदावन्द का कोई हुक्म नहीं लेकिन दियानतदार होने के लिए जैसा खुदावन्द की तरफ से मुझ पर रहम हुआ उसके मुवाफिक अपनी राय देता हूँ। २६ पस मौजूदह मुसीबत के खयाल से मेरी राय में आदमी के लिए यही बेहतर है कि जैसा है वैसा ही रहे। २७ अगर तेरी बीवी है तो उस से जुदा होने की कोशीश न कर और अगर तेरी बीवी नहीं तो बीवी की तलाश न कर। २८ लेकिन तू शादी करे भी तो गुनाह नहीं और अगर कुँवारी ब्याही जाए तो गुनाह नहीं मगर ऐसे लोग जिस्मानी तकलीफ पाएँगे, और मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ। २९ मगर ऐ भाइयो! मैं ये कहता हूँ कि वक़्त तंग है पस आगे को चाहिए कि बीवी वाले ऐसे हों कि गोया उनकी बीवियाँ नहीं। ३० और रोने वाले ऐसे हों गोया नहीं रोते; और खुशी करने वाले ऐसे हों गोया खुशी नहीं करते; और खरीदने वाले ऐसे हों गोया माल नहीं रखते। ३१ और दुनियावी कारोबार करनेवाले ऐसे हों कि दुनिया ही के न हो जाएँ; क्योंकि दुनिया की शकल बदलती जाती है। ३२ पस मैं ये चाहता हूँ कि तुम बेफ़िक्र रहो, बे ब्याहा शरूब खुदावन्द की फ़िक्र में रहता है कि किस तरह खुदावन्द को राज़ी करे। ३३ मगर शादी हुआ शरूब दुनिया की फ़िक्र में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी को राज़ी करे। ३४ शादी और बेशादी में भी फ़र्क है बे शादी खुदावन्द की फ़िक्र में रहती है ताकि उसका जिस्म और रूह दोनों पाक हों मगर ब्याही हुई औरत दुनिया की फ़िक्र में रहती है कि किस तरह अपने शौहर को राज़ी करे। ३५ ये तुम्हारे फ़ाइदे के लिए कहता हूँ न कि तुम्हें फ़सॉने के लिए; बल्कि इसलिए कि जो ज़ेबा है वही अमल में आए और तुम खुदावन्द की खिदमत में बिना शक किये मशगूल

रहो। ३६ अगर कोई ये समझे कि मैं अपनी उस कुंवारी लड़की की हकतल्फ़ी करता हूँ जिसकी जवानी ढल चली है और ज़रूरत भी मा'लूम हो तो इस्तिथार है इस में गुनाह नहीं वो उसकी शादी होने दे। ३७ मगर जो अपने दिल में पुरूता हो और इस की कुछ ज़रूरत न हो बल्कि अपने इरादे के अंजाम देने पर कादिर हो और दिल में अहद कर लिया हो कि मैं अपनी लड़की को बेनिकाह रखूँगा वो अच्छा करता है। ३८ पस जो अपनी कुंवारी लड़की को शादी कर देता है वो अच्छा करता है और जो नहीं करता वो और भी अच्छा करता है। ३९ जब तक कि 'औरत का शौहर जीता है वो उस की पाबन्द है पर जब उसका शौहर मर जाए तो जिससे चाहे शादी कर सकती है मगर सिर्फ़ खुदावन्द में। ४० लेकिन जैसी है अगर वैसी ही रहे तो मेरी राय में ज़्यादा खुश नसीब है और मैं समझता हूँ कि खुदा का रूह मुझ में भी है।

८

१ अब बुतों की कुर्बानियों के बारे में ये है हम जानते हैं कि हम सब इल्म रखते हैं इल्म गुरूर पैदा करता है लेकिन मुहब्बत तरक्की का ज़रिया है। २ अगर कोई गुमान करे कि मैं कुछ जानता हूँ तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता। ३ लेकिन जो कोई खुदा से मुहब्बत रखता है उस को खुदा पहचानता है। ४ पस बुतों की कुर्बानियों के गोश्त खाने के ज़रिए हम जानते हैं कि बुत दुनिया में कोई चीज़ नहीं और सिवा एक के और कोई खुदा नहीं। ५ अगरचे आसमान-ओ-ज़मीन में बहुत से खुदा कहलाते हैं चुनाँचे बहुत से खुदा और बहुत से खुदावन्द हैं। ६ लेकिन हमारे नज़दीक तो एक ही खुदा है या'नी बाप जिसकी तरफ़ से सब चीज़ें हैं और हम उसी के लिए हैं और एक ही खुदावन्द है या'नी 'ईसा' मसीह जिसके वसीले से सब चीज़ें मौजूद हुईं और हम भी उसी के वसीले से हैं। ७ लेकिन सब को ये इल्म नहीं बल्कि कुछ को अब तक बुतपरस्ती

की आदत है इसलिए उस गोशत को बुत की कुर्बानी जान कर खाते हैं और उसका दिल, चूँकि कमज़ोर है, गन्दा हो जाता है। ८ खाना हमें खुदा से नहीं मिलाएगा; अगर न खाएँ तो हमारा कुछ नुक़सान नहीं और अगर खाएँ तो कुछ फ़ायदा नहीं। ९ लेकिन होशियार रहो ऐसा न हो कि तुम्हारी आज़ादी कमज़ोरों के लिए ठोकर का ज़रिया हो जाए। १० क्योंकि अगर कोई तुझ साहिब'ए इल्म को बुत खाने में खाना खाते देखे और वो कमज़ोर शरूब हो तो क्या उस का दिल बुतों की कुर्बानी खाने पर मज़बूत न हो जाएगा? ११ गरज़ तेरे इल्म की वजह से वो कमज़ोर शरूब या'नी वो भाई जिसकी खातिर मसीह मरा, हलाक हो जाएगा। १२ और तुम इस तरह भाइयों के गुनाहगार होकर और उनके कमज़ोर दिल को घायल करके मसीह के गुनाहगार ठहरते हो। १३ इस वजह से अगर खाना मेरे भाई को ठोकर खिलाए तो मैं कभी हरगिज़ गोशत न खाऊँगा, ताकि अपने भाई के लिए ठोकर की वजह न बनूँ।

९

१ क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं रसूल नहीं? क्या मैंने 'ईसा' को नहीं देखा जो हमारा खुदावन्द है? क्या तुम खुदावन्द में मेरे बनाए हुए नहीं? २ अगर मैं औरों के लिए रसूल नहीं तो तुम्हारे लिए बे'शक़ हूँ क्योंकि तुम खुदावन्द में मेरी रिसालत पर मुहर हो। ३ जो मेरा इम्तिहान करते हैं उनके लिए मेरा यही जवाब है। ४ क्या हमें खाने पीने का इस्लियार नहीं? ५ क्या हम को ये इस्लियार नहीं कि किसी मसीह बहन को शादी कर के लिए फिरें, जैसा और रसूल और खुदावन्द के भाई और कैफ़ा करते हैं। ६ या सिर्फ़ मुझे और बरनाबास को ही मेहनत मशक़क़त से बाज़ रहने का इस्लियार नहीं। ७ कौन सा सिपाही कभी अपनी गिरह से खाकर जंग करता है? कौन बाग़ लगाकर उसका फल नहीं खाता या कौन भेड़ो को चरा कर उन भेड़ो का दूध नहीं पीता? ८ क्या मैं ये बातें इंसानी अंदाज ही के मुताबिक़ कहता हूँ? क्या तौरेत भी यही नहीं कहती?

९, चुनाँचे मूसा की तौरत में लिखा है“दाँएँ में चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना”क्या खुदा को बैलों की फ़िक्र है? १० या ख़ास हमारे वास्ते ये फ़रमाता है हाँ ये हमारे वास्ते लिखा गया क्यूँकि मुनासिब है कि जोतने वाला उम्मीद पर जोते और दाँएँ चलाने वाला हिस्सा पाने की उम्मीद पर दाँएँ चलाए। ११ पस जब हम ने तुम्हारे लिए रूहानी चीज़ें बोईं तो क्या ये कोई बड़ी बात है कि हम तुम्हारी जिस्मानी चीज़ों की फ़सल काटें। १२ जब औरों का तुम पर ये इस्लितयार है, तो क्या हमारा इस से ज़्यादा न होगा? लेकिन हम ने इस इस्लितयार से काम नहीं किया; बल्कि हर चीज़ की बर्दाशत करते हैं, ताकि हमारी वजह मसीह की खुशख़बरी में हर्ज न हो। १३ क्या तुम नहीं जानते कि जो मुक़द्दस चीज़ों की ख़िदमत करते हैं वो हैकल से खाते हैं? और जो कुर्बानगाह के ख़िदमत गुज़ार हैं वो कुर्बानगाह के साथ हिस्सा पाते हैं?। १४ इस तरह खुदावन्द ने भी मुकर्रर किया है कि खुशख़बरी सुनाने खुशख़बरी वाले के वसीले से गुज़ारा करें। १५ लेकिन मैंने इन में से किसी बात पर अमल नहीं किया और न इस ग़रज़ से ये लिखा कि मेरे वास्ते ऐसा किया जाए; क्यूँकि मेरा मरना ही इस से बेहतर है कि कोई मेरा फ़ख़्र खो दे। १६ अगर खुशख़बरी सुनाऊँ तो मेरा कुछ फ़ख़्र नहीं क्यूँकि ये तो मेरे लिए ज़रूरी बात है बल्कि मुझ पर अफ़सोस है अगर खुशख़बरी न सुनाऊँ। १७ क्यूँकि अगर अपनी मर्जी से ये करता हूँ तो मेरे लिए अज़्र है और अगर अपनी मर्जी से नही करता तो मुख्तारी मेरे सुपुर्द हुई है। १८ पस मुझे क्या अज़्र मिलता है? ये कि जब इंजील का ऐलान करूँ तो खुशख़बरी को मुफ़्त कर दूँ ताकि जो इस्लितयार मुझे खुशख़बरी के बारे में हासिल है उसके मुवाफ़िक़ पूरा अमल न करूँ। १९ अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर भी मैंने अपने आपको सबका गुलाम बना दिया है ताकि और भी ज़्यादा लोगों को खींच लाऊँ। २० मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना, ताकि यहूदियों को खींच लाऊँ, जो लोग शरी'अत के

मातहत हैं उन के लिए मैं शरी'अत के मातहत हुआ; ताकि शरी'अत के मातहतों को खींच लाऊँ अगरचे खुद शरी'अत के मातहत न था। २१ बेशरा लोगों के लिए बेशरा' बना ताकि बेशरा' लोगों को खींच लाऊँ; (अगरचे खुदा के नज़दीक बेशरा' न था; बल्कि मसीह की शरी'अत के ताबे था)। २२ कमज़ोरों के लिए कमज़ोर बना, ताकि कमज़ोरों को खींच लाऊँ; मैं सब आदमियों के लिए सब कुछ बना हुआ हूँ; ताकि किसी तरह से कुछ को बचाऊँ। २३ मैं सब कुछ इन्जील की खातिर करता हूँ, ताकि औरों के साथ उस में शरीक होऊँ। २४ क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौड़ने वाले दौड़ते तो सभी हैं मगर इन'आम एक ही ले जाता है? तुम भी ऐसा ही दौड़ो ताकि जीतो। २५ हर पहलवान सब तरह का परहेज़ करता है वो लोग तो मुरझाने वाला सेहरा पाने के लिए ये करते हैं मगर हम उस सेहरे के लिए ये करते हैं जो नहीं मुरझाता। २६ पस मैं भी इसी तरह दौड़ता हूँ या'नी बेठिकाना नहीं; मैं इसी तरह मुक्कों से लड़ता हूँ; यानी उस की तरह नहीं जो हवा को मारते हैं। २७ बल्कि मैं अपने बदन को मारता कूटता और उसे क़ाबू में रखता हूँ; ऐसा न हो कि औरों में ऐलान कर के आप ना मक़बूल ठहरूँ।

१०

१ ऐ भाइयों! मैं तुम्हारा इस से नावाकिफ़ रहना नहीं चाहता कि हमारे सब बाप दादा बादल के नीचे थे; और सब के सब समुन्दर में से गुज़रे। २ और सब ही ने उस बादल और समुन्दर में मूसा का बपतिस्मा लिया। ३ और सब ने एक ही रूहानी खुराक खाई। ४ और सब ने एक ही रूहानी पानी पिया क्योंकि वो उस रूहानी चट्टान में से पानी पीते थे जो उन के साथ साथ चलती थी और वो चट्टान मसीह था। ५ मगर उन में अक्सरों से खुदा राज़ी न हुआ चुनाँचे वो वीराने में ढेर हो गए। ६ ये बातें हमारे लिए इबरत ठहरीं, ताकि हम बुरी चीज़ों की ख़्वाहिश न करें, जैसे उन्होंने ने की। ७ और तुम बुतपरस्त

न बनो जिस तरह कुछ उनमें से बन गए थे“चुनाँचे लिखा है।लोग खाने पीने को बैठे फिर नाचने कूदने को उठे। ८ और हम हरामकारी न करें जिस तरह उनमें से कुछ ने की, और एक ही दिन में तेईस हज़ार मर गए। ९ और हम खुदा वन्द की आज़माइश न करें जैसे उन में से कुछ ने की और साँपों ने उन्हें हलाक किया। १० और तुम बड़बड़ाओ नहीं जिस तरह उन में से कुछ बड़बड़ाए और हलाक करने वाले से हलाक हुए। ११ ये बातें उन पर 'इब्रत के लिए वाक़े' हुईं और हम आख़री ज़माने वालों की नसीहत के वास्ते लिखी गईं। १२ पस जो कोई अपने आप को कायम समझता है, वो ख़बरदार रहे के गिर न पड़े। १३ तुम किसी ऐसी आज़माइश में न पड़े जो इंसान की आज़माइश से बाहर हो खुदा सच्चा है वो तुम को तुम्हारी ताक़त से ज्यादा आज़माइश में पड़ने न देगा, बल्कि आज़माइश के साथ निकलने की राह भी पैदा कर देगा, ताकि तुम बर्दाश्त कर सको। १४ इस वजह से ऐ मेरे प्यारो! बुतपरस्ती से भागो। १५ मैं अक्लमन्द जानकर तुम से कलाम करता हूँ; जो मैं कहता हूँ, तुम आप उसे परखो। १६ वो बरकत का प्याला जिस पर हम बरकत चाहते हैं क्या मसीह के खून की शराकत नहीं? वो रोटी जिसे हम तोड़ते हैं क्या मसीह के बदन की शराकत नहीं? १७ चूँकि रोटी एक ही है इस लिए हम जो बहुत से हैं एक बदन हैं क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में शरीक होते हैं। १८ जो जिस्म के ऐ'तिबार से इस्राइली हैं उन पर नज़र करो क्या कुर्बानी का गोश्त खानेवाले कुर्बानगाह के शरीक नहीं? १९ पस मैं क्या ये कहता हूँ कि बुतों की कुर्बानी कुछ चीज़ है या बुत कुछ चीज़ है? २० नहीं बल्कि मैं ये कहता हूँ कि जो कुर्बानी ग़ैर क्रौमें करती हैं शयातीन के लिए कुर्बानी करती हैं; न कि खुदा के लिए, और मैं नहीं चाहता कि तुम शयातीन के शरीक हो। २१ तुम खुदावन्द के प्याले और शयातीन के प्याले दोनों में से नहीं पी सकते; खुदावन्द के दस्तरख़वान और शयातीन के दस्तरख़वान

दोनों पर शरीक नहीं हो सकते। २२ क्या हम खुदावन्द की गौरत को जोश दिलाते हैं? क्या हम उस से ताक़तवर हैं? २३ सब चीज़ें जाएज़ तो हैं, मगर सब चीज़ें मुफ़ीद नहीं; जाएज़ तो हैं मगर तरक्की का ज़रिया नहीं। २४ कोई अपनी बेहतरी न ढूँडे बल्कि दूसरे की। २५ जो कुछ क्रस्साबों की दुकानों में बिकता है वो खाओ और दीनी इम्तियाज़ की वजह से कुछ न पूछो। २६ क्योंकि ज़मीन और उसकी मा'मूरी खुदावन्द की है। ” २७ अगर बे'ईमानों में से कोई तुम्हारी दा'वत करे और तुम जाने पर राज़ी हो तो जो कुछ तुम्हारे आगे रखवा जाए उसे खाओ और दीनी इम्तियाज़ की वजह से कुछ न पूछो। २८ लेकिन अगर कोई तुम से कहे; ये कुर्बानी का गोश्त है, तो उस की वजह से न खाओ। २९ दीनी इम्तियाज़ से मेरा मतलब तेरा इम्तियाज़ नहीं बल्कि उस दूसरे का; भला मेरी आज़ादी दूसरे शरूस्स के इम्तियाज़ से क्यूँ परखी जाए?। ३० अगर मैं शुक्र कर के खाता हूँ तो जिस चीज़ पर शुक्र करता हूँ उसकी वजह से किस लिए बदनाम किया जाता हूँ?। ३१ पस तुम खाओ या पियो जो कुछ करो खुदा के जलाल के लिए करो। ३२ तुम न यहूदियों के लिए ठोकर का ज़रिया बनो; न यूनानियों के लिए, न खुदा की कलीसिया के लिए। ३३ चुनाँचे मैं भी सब बातों में सब को खुश करता हूँ और अपना नहीं बल्कि बहुतों का फ़ाइदा ढूँडता हूँ, ताकि वो नजात पाएँ।

११

१ तुम मेरी तरह बनो जैसा मैं मसीह की तरह बनता हूँ। २ मैं तुम्हारी ता'रीफ़ करता हूँ कि तुम हर बात में मुझे याद रखते हो और जिस तरह मैंने तुम्हें रिवायतें पहुँचा दीं, उसी तरह उन को बरकरार रखो। ३ पस मैं तुम्हें ख़बर करना चाहता हूँ कि हर मर्द का सिर मसीह और 'औरत का सिर मर्द और मसीह का सिर खुदा है। ४ जो मर्द सिर ढके हुए दुआ या नबुव्वत करता है वो अपने सिर को बेहुरमत

करता है। ५ और जो 'औरत बे सिर ढके दुआ या नबुव्वत करती है वो अपने सिर को बेहुरमत करती है; क्यूँकि वो सिर मुंडी के बराबर है। ६ अगर 'औरत ओढ़नी न ओढ़े तो बाल भी कटाए; अगर 'औरत का बाल कटाना या सिर मुंडाना शर्म की बात है तो ओढ़नी ओढ़े। ७ अलबत्ता मर्द को अपना सिर ढाँकना न चाहिए क्यूँकि वो खुदा की सूरत और उसका जलाल है, मगर 'औरत मर्द का जलाल है। ८ इसलिए कि मर्द 'औरत से नहीं बल्कि 'औरत मर्द से है। ९ और मर्द 'औरत के लिए नहीं बल्कि 'औरत मर्द के लिए पैदा हुई है। १० पस फ़रिशतों की वजह से 'औरत को चाहिए कि अपने सिर पर महकूम होने की अलामत रखे। ११ तोभी खुदावन्द में न 'औरत मर्द के बग़ैर है न मर्द 'औरत के बग़ैर । १२ क्यूँकि जैसे 'औरत मर्द से है वैसे ही मर्द भी 'औरत के वसीले से है मगर सब चीज़ें खुदा की तरफ़ से हैं। १३ तुम आप ही इंसाफ़ करो; क्या 'औरत का बे सिर ढाँके खुदा से दुआ करना मुनासिब है। १४ क्या तुम को तब'ई तौर पर भी मा'लूम नहीं कि अगर मर्द लम्बे बाल रखे तो उस की बेहुरमती है। १५ अगर 'औरत के लम्बे बाल हों तो उसकी ज़ीनत है, क्यूँकि बाल उसे पर्दे के लिए दिए गए हैं। १६ लेकिन अगर कोई हुज्जती निकले तो ये जान ले कि न हमारा ऐसा दस्तूर है न खुदावन्द की कलीसियाओं का। १७ लेकिन ये हुक्म जो देता हूँ उस में तुम्हारी तारीफ़ नहीं करता इसलिए कि तुम्हारे जमा होने से फ़ाइदा नहीं, बल्कि नुक़सान होता है। १८ क्यूँकि अब्बल तो मैं ये सुनता हूँ कि जिस वक़्त तुम्हारी कलीसिया जमा होती है तो तुम में तफ़्रके होते हैं और मैं इसका किसी क़दर यक़ीन भी करता हूँ। १९ क्यूँकि तुम में बिद'अतों का भी होना ज़रूरी है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि तुम में मक़बूल कौन से हैं । २० पस तुम सब एक साथ जमा होते हो तो तुम्हारा वो खाना अशा'ए -रब्बानी नहीं हो सकता। २१ क्यूँकि खाने के वक़्त हर शख़्स दूसरे से पहले अपना हिस्सा खा लेता है और

कोई तो भूका रहता है और किसी को नशा हो जाता है । २२ क्यूँ? खाने पीने के लिए तुम्हारे पास घर नहीं? या खुदा की कलीसिया को ना चीज़ जानते और जिनके पास नहीं उन को शर्मिन्दा करते हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या इस बात में तुम्हारी तारीफ़ करूँ? मैं तारीफ़ नहीं करता। २३ क्यूँकि ये बात मुझे खुदावन्द से पहुँची और मैंने तुमको भी पहुँचा दी कि खुदावन्द ईसा' ने जिस रात वो पकड़वाया गया रोटी ली। २४ और शुक्र करके तोड़ी और कहा; लो खाओ ये मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया है; मेरी यादगारी के वास्ते यही किया करो। २५ इसी तरह उस ने खाने के बाद प्याला भी लिया और कहा, ये प्याला मेरे खून में नया अहद है जब कभी पियो मेरी यादगारी के लिए यही किया करो। २६ क्यूँकि जब कभी तुम ये रोटी खाते और इस प्याले में से पीते हो तो खुदावन्द की मौत का इज़हार करते हो; जब तक वो न आए। २७ इस वास्ते जो कोई नामुनासिब तौर पर खुदावन्द की रोटी खाए या उसके प्याले में से पिए; वो खुदा वन्द के बदन और खून के बारे में कुसूरवार होगा। २८ पस आदमी अपने आप को आज़मा ले और इसी तरह उस रोटी में से खाए और उस प्याले में से पिए। २९ क्यूँकि जो खाते पीते वक़्त खुदा वन्द के बदन को न पहचाने वो इस खाने पीने से सज़ा पाएगा। ३० इसी वजह से तुम में बहुत सारे कमज़ोर और बीमार हैं और बहुत से सो भी गए। ३१ अगर हम अपने आप को जाँचते तो सज़ा न पाते। ३२ लेकिन खुदा हमको सज़ा देकर तरबियत करता है, ताकि हम दुनिया के साथ मुजरिम न ठहरें। ३३ पस ऐ मेरे भाइयों! जब तुम खाने को जमा हो तो एक दूसरे की राह देखो। ३४ अगर कोई भूखा हो तो अपने घर में खाले, ताकि तुम्हारा जमा होना सज़ा का ज़रिया न हो; बाक़ी बातों को मैं आकर दुरुस्त कर दूंगा।

१२

१ ऐ भाइयों! मैं नहीं चाहता कि तुम रूहानी ने'मतों के बारे में

बेखबर रहो। २ तुम जानते हो कि जब तुम गैर क्रौम थे, तो गूंगे बुतों के पीछे जिस तरह कोई तुम को ले जाता था; उसी तरह जाते थे। ३ पस मैं तुम्हें बताता हूँ कि जो कोई खुदा के रूह की हिदायत से बोलता है; वो नहीं कहता कि ईसा मला'ऊन है; और न कोई रूह उल -कुदूस के बगैर कह सकता है कि ईसा' खुदावन्द है। ४ नेअ'मतें तो तरह तरह की हैं मगर रूह एक ही है। ५ और खिदमतें तो तरह तरह की हैं मगर खुदावन्द एक ही है। ६ और तासीरें भी तरह तरह की हैं मगर खुदा एक ही है जो सब में हर तरह का असर पैदा करता है। ७ लेकिन हर शरूस में रूह का ज़ाहिर होना फ़ाइदा पहुँचाने के लिए होता है। ८ क्योंकि एक को रूह के वसीले से हिक्मत का कलाम इनायत होता है और दूसरे को उसी रूह की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ इल्मियत का कलाम। ९ किसी को उसी रूह से ईमान और किसी को उसी रूह से शिफ़ा देने की तौफ़ीक़। १० किसी को मोजिज़ों की कुदरत, किसी को नबुव्वत, किसी को रूहों का इम्तियाज़, किसी को तरह तरह की ज़बानें, किसी को ज़बानों का तर्जुमा करना। ११ लेकिन ये सब तासीरें वही एक रूह करता है; और जिस को जो चाहता है बाँटता है, १२ क्योंकि जिस तरह बदन एक है और उस के आ'ज़ा बहुत से हैं, और बदन के सब आ'ज़ा गरचे बहुत से हैं, मगर हमसब मिलकर एक ही बदन हैं; उसी तरह मसीह भी है। १३ क्योंकि हम सब में चाहे यहूदी हों, चाहे यूनानी, चाहे गुलाम, चाहे आज़ाद, एक ही रूह के वसीले से एक बदन होने के लिए बपतिस्मा लिया और हम सब को एक ही रूह पिलाया गया। १४ चुनाँचे बदन में एक ही आ'ज़ा नहीं बल्कि बहुत से हैं १५ अगर पाँव कहे चुँकि मैं हाथ नहीं इसलिए बदन का नहीं तो वो इस वजह से बदन से अलग तो नहीं। १६ और अगर कान कहे चुँकि मैं आँख नहीं इसलिए बदन का नहीं तो वो इस वजह से बदन से अलग तो नहीं। १७ अगर सारा बदन आँख ही होता तो सुनना कहाँ होता? अगर सुनना ही सुनना होता तो सूँघना कहाँ होता? १८ मगर हकीकत में खुदा ने हर एक

'उज्व को बदन में अपनी मर्जी के मुवाफिक रख्वा है। १९ अगर वो सब एक ही 'उज्व होते तो बदन कहाँ होता?। २० मगर अब आ'ज़ा तो बहुत हैं लेकिन बदन एक ही है। २१ पस आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मैं तेरी मोहताज नहीं," और न सिर पाँव से कह सकता है, "मैं तेरा मोहताज नहीं।" २२ बल्कि बदन के वो आ'ज़ा जो औरों से कमज़ोर मा'लूम होते हैं बहुत ही ज़रूरी हैं। २३ और बदन के वो आ'ज़ा जिन्हें हम औरों की तरह ज़लील जानते हैं उन्हीं को ज़्यादा इज़ज़त देते हैं और हमारे नाज़ेबा आ'ज़ा बहुत ज़ेबा हो जाते हैं। २४ हालाँकि हमारे ज़ेबा आ'ज़ा मोहताज नहीं मगर खुदा ने बदन को इस तरह मुक्कब किया है, कि जो 'उज्व मोहताज है उसी को ज़्यादा 'इज़ज़त दी जाए। २५ ताकि बदन में जुदाई न पड़े, बल्कि आ'ज़ा एक दूसरे की बराबर फ़िक्र रखें। २६ पस अगर एक 'उज्व दुख पाता है तो सब आ'ज़ा उस के साथ दुख पाते हैं। २७ इसी तरह तुम मिल कर मसीह का बदन हो और फ़र्दन फ़र्दन आ'ज़ा हो। २८ और खुदा ने कलीसिया में अलग अलग शरूस् मुकर्रर किए पहले रसूल दूसरे नबी तीसरे उस्ताद फिर मोजिजे दिखाने वाले फिर शिफ़ा देने वाले मददगार मुन्तज़िम तरह तरह की ज़बाने बोलने वाले। २९ क्या सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं? क्या सब उस्ताद हैं? क्या सब मोजिजे दिखानेवाले हैं? ३० क्या सब को शिफ़ा देने की ताक़त हासिल हुई? क्या सब तरह की ज़बाने बोलते हैं? क्या सब तर्जुमा करते हैं? ३१ तुम बड़ी से बड़ी ने'मत की आरजू रख्खो, लेकिन और भी सब से उम्दा तरीका तुम्हें बताता हूँ।

१३

१ अगर मैं आदमियों और फ़रिश्तों की ज़बाने बोलूँ और मुहब्बत न रख्खूँ, तो मैं ठनठनाता पीतल या झनझनाती झाँझ हूँ। २ और अगर मुझे नबूव्वत मिले और सब भेदों और कुल इल्म की वाक़फ़ियत हो और मेरा ईमान यहाँ तक कामिल हो कि पहाड़ों को हटा दूँ

और मुहब्बत न रखूँ तो मैं कुछ भी नहीं। ३ और अगर अपना सारा माल गरीबों को खिला दूँ या अपना बदन जलाने को दूँ और मुहब्बत न रखूँ तो मुझे कुछ भी फ़ायदा नहीं। ४ मुहब्बत साबिर है और मेहरबान, मुहब्बत हसद नहीं करती, मुहब्बत शेखी नहीं मारती और फूलती नहीं; ५ नाज़ेबा काम नहीं करती, अपनी बेहतरी नहीं चाहती, झुँझलाती नहीं, बदगुमानी नहीं करती; ६ बदकारी में खुश नहीं होती, बल्कि रास्ती से खुश होती है; ७ सब कुछ सह लेती है, सब कुछ यकीन करती है, सब बातों की उम्मीद रखती है, सब बातों में बर्दाशत करती है। ८ मुहब्बत को ज़वाल नहीं, नबुव्वतें हों तो मौकूफ़ हो जाएँगी, ज़बानें हों तो जाती रहेंगी; इल्म हो तो मिट जायेंगे। ९ क्योंकि हमारा इल्म नाक़िस है और हमारी नबुव्वत ना तमाम। १० लेकिन जब कामिल आएगा तो नाक़िस जाता रहेगा। ११ जब मैं बच्चा था तो बच्चों की तरह बोलता था बच्चों की सी तबियत थी बच्चो सी समझ थी; लेकिन जब जवान हुआ तो बचपन की बातें तर्क कर दीं। १२ अब हम को आइने में धुँधला सा दिखाई देता है, मगर उस वक़्त रू ब रू देखेंगे; इस वक़्त मेरा इल्म नाक़िस है, मगर उस वक़्त ऐसे पूरे तौर पर पहचानूँगा जैसे मैं पहचानता आया हूँ। १३ गरज़ ईमान, उम्मीद, मुहब्बत ये तीनों हमेशा हैं; मगर अफ़ज़ल इन में मुहब्बत है।

१४

१ मुहब्बत के तालिब हो और रूहानी ने'मतों की भी आरजू रखो खुसूसन इसकी नबुव्वत करो। २ क्योंकि जो बेगाना ज़बान में बातें करता है वो आदमियों से बातें नहीं करता, बल्कि खुदा से; इस लिए कि उसकी कोई नहीं समझता, हालाँकि वो अपनी रूह के वसीले से राज़ की बातें करता है। ३ लेकिन जो नबुव्वत करता है वो आदमियों से तरक्की और नसीहत और तसल्ली की बातें करता है। ४ जो बेगाना ज़बान में बातें करता है वो अपनी तरक्की करता

है और जो नबुव्वत करता है वो कलीसिया की तरक्की करता है।
 ५ अगरचे मैं ये चाहता हूँ कि तुम सब बेगाना ज़बान में बातें करो, लेकिन ज़्यादा तर यही चाहता हूँ कि नबुव्वत करो; और अगर बेगाना ज़बाने बोलने वाला कलीसिया की तरक्की के लिए तर्जुमा न करे, तो नबुव्वत करने वाला उससे बड़ा है। ६ पस ऐ भाइयों! अगर मैं तुम्हारे पास आकर बेगाना ज़बानों में बातें करूँ और मुकाशिफ़ा या इल्म या नबुव्वत या ता'लीम की बातें तुम से न कहूँ; तो तुम को मुझ से क्या फ़ाइदा होगा? ७ चुनाँचे बे'जान चीज़ों में से भी जिन से आवाज़ निकलती है, मसलन बांसुरी या बरबत अगर उनकी आवाज़ों में फ़र्क न हो तो जो फ़ूँका या बजाया जाता है वो क्यूँकर पहचाना जाए? ८ और अगर तुरही की आवाज़ साफ़ न हो तो कौन लड़ाई के लिए तैयारी करेगा? ९ ऐसे ही तुम भी अगर ज़बान से कुछ बात न कहो तो जो कहा जाता है क्यूँकर समझा जाएगा? तुम हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे। १० दुनिया में चाहे कितनी ही मुस्वलिफ़ ज़बानें हों उन में से कोई भी बे'मानी न होगी। ११ पस अगर मैं किसी ज़बान के मा' ने ना समझूँ, तो बोलने वाले के नज़दीक मैं अजनबी ठहरूँगा और बोलने वाला मेरे नज़दीक अजनबी ठहरेगा। १२ पस जब तुम रूहानी नेअ'मतों की आरजू रखते हो तो ऐसी कोशिश करो, कि तुम्हारी नेअ'मतों की अफ़जूनी से कलीसिया की तरक्की हो। १३ इस वजह से जो बेगाना ज़बान से बातें करता है वो दुआ करे कि तर्जुमा भी कर सके। १४ इसलिए कि अगर मैं किसी बेगाना ज़बान में दुआ करूँ तो मेरी रूह तो दुआ करती है मगर मेरी अक्ल बेकार है। १५ पस क्या करना चाहिए? मैं रूह से भी दुआ करूँगा और अक्ल से भी दुआ करूँगा; रूह से भी गाऊँगा और अक्ल से भी गाऊँगा। १६ वरना अगर तू रूह ही से हम्द करेगा तो नावाक़िफ़ आदमी तेरी शुक्र गुज़ारी पर “आमीन” क्यूँकर कहेगा? इस लिए कि वो नहीं जानता कि तू क्या कहता है। १७ तू तो बेशक अच्छी तरह

से शुक्र करता है, मगर दूसरे की तरक्की नहीं होती। १८ मैं खुदा का शुक्र करता हूँ, कि तुम सब से ज्यादा ज़बाने बोलता हूँ। १९ लेकिन कलीसिया में बेगाना ज़बान में दस हज़ार बातें करने से मुझे ये ज़्यादा पसन्द है, कि औरों की ता'लीम के लिए पाँच ही बातें अक्ल से कहूँ। २० ऐ भाइयों! तुम समझ में बच्चे न बनो; बदी में बच्चे रहो, मगर समझ में जवान बनो। २१ तौरैत में लिखा है“खुदावन्द फ़रमाता है, “मैं बेगाना ज़बान और बेगाना होंटो से इस उम्मत से बातें करूँगा तोभी वो मेरी न सुनेंगे।।” २२ पस बेगाना ज़बानें ईमानदारों के लिए नहीं बल्कि बे'ईमानों के लिए निशान हैं और नबुव्वत बे'ईमानों के लिए नहीं, बल्कि ईमानदारों के लिए निशान है। २३ पस अगर सारी कलीसिया एक जगह जमा हो और सब के सब बेगाना ज़बानें बोलें और नावाक़िफ़ या बे'ईमान लोग अन्दर आ जाएँ, तो क्या वो तुम को दिवाना न कहेंगे। २४ लेकिन अगर जब नबुव्वत करें और कोई बे'ईमान या नावाक़िफ़ अन्दर आ जाए, तो सब उसे कायल कर देंगे और सब उसे परख लेंगे; २५ और उसके दिल के राज़ ज़ाहिर हो जाएँगे; तब वो मुँह के बल गिर कर सज्दा करेगा, और इकरार करेगा कि बेशक़ खुदा तुम में है। २६ पस ऐ भाइयों! क्या करना चाहिए? जब तुम जमा होते हो, तो हर एक के दिल में मज़मूर या ता'लीम या मुकाशिफ़ा, या बेगाना, ज़बान या तर्जुमा होता है; सब कुछ रूहानी तरक्की के लिए होना चाहिए। २७ अगर बेगाना ज़बान में बातें करना हो तो दो दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन तीन शरूब बारी बारी से बोलें और एक शरूब तर्जुमा करे। २८ और अगर कोई तर्जुमा करने वाला न हो तो बेगाना ज़बान बोलनेवाला कलीसिया में चुप रहे और अपने दिल से और खुदा से बातें करे। २९ नबियों में से दो या तीन बोलें और बाकी उनके कलाम को परखें। ३० लेकिन अगर दूसरे पास बैठने वाले पर वही उतरे तो पहला ख़ामोश हो जाए। ३१ क्यूँकि तुम सब के सब एक एक करके नबुव्वत करते हो, ताकि सब सीखें और सब को नसीहत हो। ३२ और नबियों की रूहें नबियों के ताबे

हैं। ३३ क्योंकि खुदा अबतरी का नहीं, बल्कि सुकून का बानी है जैसा मुक़द्दसों की सब कलीसियायों में है। ३४ औरतें कलीसिया के मज्में में खामोश रहें, क्योंकि उन्हें बोलने का हुक्म नहीं बल्कि ताबे रहें जैसा तौरत में भी लिखा है। ३५ और अगर कुछ सीखना चाहें तो घर में अपने अपने शौहर से पूछें, क्योंकि औरत का कलीसिया के मज्में में बोलना शर्म की बात है। ३६ क्या खुदा का कलाम तुम में से निकला या सिर्फ तुम ही तक पहुँचा है। ३७ अगर कोई अपने आपको नबी या रूहानी समझे तो ये जान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ वो खुदावन्द के हुक्म हैं। ३८ और अगर कोई न जाने तो न जानें। ३९ पस ऐ भाइयों! नबुव्वत करने की आरजू रखवो और ज़बानें बोलने से मना न करो। ४० मगर सब बातें शाइस्तगी और करीने के साथ अमल में लाएँ।

१५

१ ऐ भाइयों! मैं तुम्हें वही खुशखबरी बताए देता हूँ जो पहले दे चुका हूँ जिसे तुम ने क़बूल भी कर लिया था और जिस पर कायम भी हो। २ उसी के वसीले से तुम को नजात भी मिली है बशर्ते कि वो खुशखबरी जो मैंने तुम्हें दी थी याद रखते हो वरना तुम्हारा ईमान लाना बेफ़ाइदा हुआ। ३ चुनाँचे मैंने सब से पहले तुम को वही बात पहुँचा दी जो मुझे पहुँची थी; कि मसीह किताब-ए-मुक़द्दस के मुताबिक़ हमारे गुनाहों के लिए मरा। ४ और दफ़न हुआ और तीसरे दिन किताब ऐ-मुक़द्दस के मुताबिक़ जी उठा। ५ और कैफ़ा और उस के बा'द उन बारह को दिखाई दिया। ६ फिर पाँच सौ से ज्यादा भाइयों को एक साथ दिखाई दिया जिन में अक्सर अब तक मौजूद हैं और कुछ सो गए। ७ फिर या'कूब को दिखाई दिया फिर सब रसूलों को। ८ और सब से पीछे मुझ को जो गोया अधूरे दिनों की पैदाइश हूँ दिखाई दिया। ९ क्योंकि मैं रसूलों में सब से छोटा हूँ,

बल्कि रसूल कहलाने के लायक नहीं इसलिए कि मैंने खुदा की कलीसिया को सताया था। १० लेकिन जो कुछ हूँ खुदा के फ़ज़ल से हूँ और उसका फ़ज़ल जो मुझ पर हुआ वो बेफ़ाइदा नहीं हुआ बल्कि मैंने उन सब से ज्यादा मेंहनत की और ये मेरी तरफ़ से नहीं हुई बल्कि खुदा के फ़ज़ल से जो मुझ पर था। ११ पस चाहे मैं हूँ चाहे वो हों हम यही ऐलान करते हैं और इसी पर तुम ईमान भी लाए। १२ पस जब मसीह की ये मनादी की जाती है कि वो मुर्दों में से जी उठा तो तुम में से कुछ इस तरह कहते हैं कि मुर्दों की क़यामत है ही नहीं। १३ अगर मुर्दों की क़यामत नहीं तो मसीह भी नहीं जी उठा है। १४ और अगर मसीह नहीं जी उठा तो हमारी मनादी भी बेफ़ाइदा है और तुम्हारा ईमान भी बेफ़ाइदा है। १५ बल्कि हम खुदा के झूठे गवाह ठहरे क्यूँकि हम ने खुदा के बारे में ये गवाही दी कि उसने मसीह को जिला दिया हालाँकि नहीं जिलाया अगर बिलफ़र्ज़ मुर्दे नहीं जी उठते। १६ और अगर मुर्दे नहीं जी उठते तो मसीह भी नहीं जी उठा। १७ और अगर मसीह नहीं जी उठा तो तुम्हारा ईमान बेफ़ाइदा है तुम अब तक अपने गुनाहों में गिरफ़्तार हो। १८ बल्कि जो मसीह में सो गए हैं वो भी हलाक हुए। १९ अगर हम सिर्फ़ इसी ज़िन्दगी में मसीह में उम्मीद रखते हैं तो सब आदमियों से ज़्यादा बदनसीब हैं। २० लेकिन फ़िलवक्त मसीह मुर्दों में से जी उठा है और जो सो गए हैं उन में पहला फल हुआ। २१ क्यूँकि अब आदमी की वजह से मौत आई तो आदमी की वजह से मुर्दों की क़यामत भी आई। २२ और जैसे आदम में सब मरते हैं वैसे ही मसीह में सब ज़िन्दा किए जाएँगे। २३ लेकिन हर एक अपनी अपनी बारी से ; पहला फल मसीह फिर मसीह के आने पर उसके लोग। २४ इसके बा'द आखिरत होगी; उस वक्त वो सारी हुकूमत और सारा इस्लितयार और कुदरत नेस्त करके बादशाही को खुदा या'नी बाप के हवाले कर देगा। २५ क्यूँकि जब तक कि वो सब दुश्मनों को अपने पाँव तले न ले आए उस को बादशाही करना ज़रूरी है। २६ सब से पिछला दुश्मन जो नेस्त किया

जाएगा वो मौत है। २७ क्योंकि खुदा ने सब कुछ उसके पाँव तले कर दिया है; मगर जब वो फ़रमाता है कि सब कुछ उसके ताबे' कर दिया गया तो ज़ाहिर है कि जिसने सब कुछ उसके ताबे कर दिया; वो अलग रहा। २८ और जब सब कुछ उसके ताबे' कर दिया जाएगा तो बेटा खुद उसके ताबे' हो जाएगा जिसने सब चीज़ें उसके ताबे' कर दीं ताकि सब में खुदा ही सब कुछ है। २९ वरना जो लोग मुर्दों के लिए बपतिस्मा लेते हैं; वो क्या करेंगे? अगर मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यों उन के लिए बपतिस्मा लेते हो?। ३० और हम क्यों हर वक़्त ख़तरे में पड़े रहते हैं? ३१ ऐ भाइयों! उस फ़ख़ की क़सम जो हमारे ईसा' मसीह में तुम पर है में हर रोज़ मरता हूँ। ३२ अगर मैं इंसान की तरह इफ़िसुस में दरिन्दों से लड़ा तो मुझे क्या फ़ाइदा? अगर मुर्दे न जिलाए जाएँगे “तो आओ खाएँ पीएँ क्योंकि कल तो मर ही जाएँगे।” ३३ धोखा न खाओ “बुरी सोहबतें अच्छी आदतों को बिगाड़ देती हैं।” ३४ रास्तबाज़ होने के लिए होश में आओ और गुनाह न करो, क्योंकि कुछ खुदा से नावाक़िफ़ हैं; मैं तुम्हें शर्म दिलाने को ये कहता हूँ। ३५ अब कोई ये कहेगा, “मुर्दे किस तरह जी उठते हैं? और कैसे जिस्म के साथ आते हैं?” ३६ ऐ, नादान! तू खुद जो कुछ बोता है जब तक वो न मरे ज़िन्दा नहीं किया जाता। ३७ और जो तू बोता है, ये वो जिस्म नहीं जो पैदा होने वाला है बल्कि सिर्फ़ दाना है; चाहे गेहूँ का चाहे किसी और चीज़ का। ३८ मगर खुदा ने जैसा इरादा कर लिया वैसा ही उसको जिस्म देता है और हर एक बीज को उसका ख़ास जिस्म। ३९ सब गोश्त एक जैसा गोश्त नहीं; बल्कि आदमियों का गोश्त और है, चौपायों का गोश्त और; परिन्दों का गोश्त और है मछलियों का गोश्त और। ४० आसमानी भी जिस्म हैं, और ज़मीनी भी मगर आसमानियों का जलाल और है, और ज़मीनियों का और। ४१ आफ़ताब का जलाल और है, माहताब का जलाल और, सितारों का जलाल और, क्योंकि सितारे सितारे के जलाल में फ़र्क़ है। ४२ मुर्दों की क़यामत भी ऐसी ही है; जिस्म फ़ना की हालत में बोया जाता

1 कुरिन्थियों १५:४३-२९१ कुरिन्थियों १५:५८

है, और हमेशा की हालत में जी उठता है। ४३ बेहुरमती की हालत में बोया जाता है, और जलाल की हालत में जी उठता है, कमज़ोरी की हालत में बोया जाता है और कुव्वत की हालत में जी उठता है। ४४ नफ़सानी जिस्म बोया जाता है, और रूहानी जिस्म जी उठता है जब नफ़सानी जिस्म है तो रूहानी जिस्म भी है। ४५ चुनाँचे लिखा भी है, “पहला आदमी या'नी आदम जिन्दा नफ़स बना पिछला आदम जिन्दगी बरूशने वाली रूह बना।” ४६ लेकिन रूहानी पहले न था बल्कि नफ़सानी था इसके बा'द रूहानी हुआ। ४७ पहला आदमी ज़मीन से या'नी ख़ाकी था दूसरा आदमी आसमानी है। ४८ जैसा वो ख़ाकी था वैसे ही और ख़ाकी भी हैं और जैसा वो आसमानी है वैसे ही और आसमानी भी हैं। ४९ और जिस तरह हम इस ख़ाकी की सूरत पर हुए उसी तरह उस आसमानी की सूरत पर भी होंगे। ५० ऐ भाइयों! मेरा मतलब ये है कि गोशत और ख़ून ख़ुदा की बादशाही के वारिस नहीं हो सकते और न फ़ना बक्रा की वारिस हो सकती है। ५१ देखो मैं तुम से राज़ की बात कहता हूँ हम सब तो नहीं सोएँगे मगर सब बदल जाएँगे। ५२ और ये एक दम में, एक पल में पिछला नरसिंगा फूँकते ही होगा क्योंकि नरसिंगा फूँका जाएगा और मुर्दे ग़ैर फ़ानी हालत में उठेंगे और हम बदल जाएँगे। ५३ क्योंकि ज़रूरी है कि ये फ़ानी जिस्म बक्रा का जामा पहने और ये मरने वाला जिस्म हमेशा की जिंदगी का जामा पहने। ५४ जब ये फ़ानी जिस्म बक्रा का जामा पहन चुकेगा और ये मरने वाला जिस्म हमेशा हमेशा का जामा पहन चुकेगा तो वो क़ौल पूरा होगा जो लिखा है “मौत फ़तह का लुक्मा हो जाएगी। ५५ ऐ मौत तेरी फ़तह कहाँ रही? ऐ मौत तेरा डंक कहाँ रहा?” ५६ मौत का डंक गुनाह है और गुनाह का ज़ोर शरी'अत है। ५७ मगर ख़ुदा का शुक्र है, जो हमारे ख़ुदावन्द 'ईसा' मसीह के वसीले से हम को फ़तह बरूशता है। ५८ पस ऐ मेरे अज़ीज़ भाइयों! साबित क़दम और क़ायम रहो और ख़ुदावन्द के काम में हमेशा बढ़ते रहो क्योंकि ये जानते हो कि तुम्हारी मेंहनत ख़ुदावन्द

में बेफ़ाइदा नहीं है।

१६

१ अब उस चन्दे के बारे में जो मुक़द्दसों के लिए किया जाता है; जैसा मैं ने गलतिया की कलीसियाओं को हुक्म दिया वैसे ही तुम भी करो। २ हफ़्ते के पहले दिन तुम में से हर शरूस् अपनी आमदनी के मुवाफ़िक़ कुछ अपने पास रख छोड़ा करे ताकि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े। ३ और जब मैं आऊँगा तो जिन्हें तुम मंज़ूर करोगे उनको मैं ख़त देकर भेज दूँगा कि तुम्हारी ख़ैरात यरूशलीम को पहुँचा दें। ४ अगर मेरा भी जाना मुनासिब हुआ तो वो मेरे साथ जाएँगे। ५ मैं मकिदूनिया होकर तुम्हारे पास आऊँगा; क्योंकि मुझे मकिदूनिया हो कर जाना तो है ही। ६ मगर रहूँगा शायद तुम्हारे पास और जाड़ा भी तुम्हारे पास ही काटूँ ताकि जिस तरफ़ मैं जाना चाहूँ तुम मुझे उस तरफ़ रवाना कर दो। ७ क्योंकि मैं अब राह में तुम से मुलाक़ात करना नहीं चाहता बल्कि मुझे उम्मीद है कि ख़ुदावन्द ने चाहा तो कुछ अरसे तुम्हारे पास रहूँगा। ८ लेकिन मैं ईद'ए पिनतेकुस्त तक इफ़िसुस में रहूँगा। ९ क्योंकि मेरे लिए एक वसी' और कार आमद दरवाज़ा खुला है और मुख़ालिफ़ बहुत से हैं। १० अगर तीमुथियुस आ जाए तो ख़्याल रखना कि वो तुम्हारे पास बेख़ौफ़ रहे क्योंकि वो मेरी तरह ख़ुदावन्द का काम करता है। ११ पस कोई उसे हक़ीर न जाने बल्कि उसको सही सलामत इस तरफ़ रवाना करना कि मेरे पास आजाए क्योंकि मैं मुन्तज़िर हूँ कि वो भाइयों समेत आए। १२ और भाई अपुल्लोस से मैंने बहुत इल्तिमास किया कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाए; मगर इस वक़्त जाने पर वो अभी राज़ी न हुआ लेकिन जब उस को मौक़ा मिलेगा तो जाएगा। १३ जागते रहो ईमान में क़ायम रहो मर्दानगी करो मज़बूत हो। १४ जो कुछ करते हो मुहब्बत से करो। १५ ऐ भाइयो! तुम स्तिफ़नास के ख़ानदान को जानते हो कि वो अख़्या के पहले

फल हैं और मुकद्दसों की खिदमत के लिए तैयार रहते हैं। १६ पस मैं तुम से इल्तिमास करता हूँ कि ऐसे लोगों के ताबे रहो बल्कि हर एक के जो इस काम और मेंहनत में शरीक हैं। १७ और मैं स्तिफ़नास और फ़रतूनातूस और अखीकुस के आने से खुश हूँ क्योंकि जो तुम में से रह गया था उन्होंने पूरा कर दिया। १८ और उन्होंने मेरी और तुम्हारी रूह को ताज़ा किया पस ऐसों को मानो। १९ आसिया की कलीसिया तुम को सलाम कहती है अक्विवला और प्रिस्का उस कलीसिया समेत जो उन के घर में हैं, तुम्हें खुदावन्द में बहुत बहुत सलाम कहते हैं। २० सब भाई तुम्हें सलाम कहते हैं पाक बोसा लेकर आपस में सलाम करो। २१ मैं पौलुस अपने हाथ से सलाम लिखता हूँ। २२ जो कोई खुदावन्द को अज़ीज़ नहीं रखता मला'ऊन हो हमारा खुदावन्द आने वाला है। २३ खुदावन्द ईसा' मसीह का फ़ज़ल तुम पर होता रहे। २४ मेरी मुहब्बत ईसा' मसीह में तुम सब से रहे| आमीन|

उर्दू बाइबिल

The New Testament in the Urdu language, BCS 2017

copyright © 2017 Bridge Connectivity Solutions

Language: उर्दू (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

You include the above copyright and source information.

If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.

If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2017-11-27

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 27 Sep 2019 from source files dated 27 Sep 2019

bb64bcb8-2153-5c47-9a6f-7f45fece3c84